Prabodh : International Journal of Languages and Social Sciences
(A Peer-Reviewed Yearly Journal) ISSN: 2349-0179

भारतीय संस्कृति

अमृतपाल कौर
सहायक आचार्य हिन्दी. देश भगत विश्वविद्यालय

मानव जीवन की गतिविधियों का संचालन अंतः वृतियों की जिस समष्टि द्वारा होता है तथा जिससे वह सही अर्थों में मनुष्य बनने की दिशा में अग्रसर होता है, उसे संस्कृति कहते हैं।

भारतीय संस्कृति
अमृतपाल कौर
सहायक आचार्य हिन्दी
देश भगत विश्वविद्यालय
मानव जीवन की गतिविधियों का संचालन अंतः वृतियों की जिस समष्टि द्वारा होता है तथा जिससे वह सही अर्थों में मनुष्य बनने की दिशा में अग्रसर होता है, उसे संस्कृति कहते हैं।

संस्कृत शब्द की व्युत्पत्तिः–
संस्कृत शब्द की व्युत्पत्ति सम उपसर्ग–पूर्वक कृ धातु में क्तिन प्रत्यय लगाने पर निष्पन्न हुई है। शब्द की उत्पत्ति संस्कार शब्द से हुई है। संस्कार से अभिप्राय संशोधन अथवा उत्तम बनाने वाले कार्य से है। इसी अर्थ में कृ का स्कृ हो जाता है।
इस प्रकार संस्कृति शब्द का अर्थ है परिष्कार और परिमार्जन अर्थात् शुद्धिकरण करना। संस्कृति शब्द का अर्थ बताते हुए गुलाब राय जी कहते हैं संस्कृति शब्द का संबंध संस्कारों से है जिसका अर्थ है संशोधन करना उत्तम परिष्कार करना। संस्कृति शब्द का भी यही अर्थ है अंग्रेजी शब्द कल्चर में वही धातु है जो एग्रीकल्चर में है इसका भी अर्थ पैदा करना या सुधारना है।
संस्कार व्यक्ति के भी होते हैं और जाति के भी। जातीय संस्कारों को ही संस्कृति कहते हैं।
संस्कृति की परिभाषाएंः–
भारतीय एवं पाश्चात्य विचारकों ने संस्कृति के स्वरूप को समझकर उसे शब्दायित करने का प्रयास किया है। दोनों वर्गों की परिभाषाएं निम्नलिखित है
भारतीय विचारकः–

1. रविन्द्र नाथ :– संस्कृति मस्तिष्क का जीवन है।
2. डॉ. राधाकृष्णनः– जीवन की विभिन्न और घनिष्ठ समस्याओं पर हुआ चिंतन और उसकी अभिव्यक्ति ही संस्कृति है।
3. श्राजगोपालचारीः– किसी भी जाति अथवा राष्ट्र के शिष्ट पुरूषों में विचार, वाणी एवं क्रिया का जो रूप व्याप्त रहता है उसी का नाम संस्कृति है।

पाश्चात्य विचारकः–

1. बेकनः– संस्कृति का वह प्रयत्न कहा जा सकता है, जिसमें वह अपन आंतरिक स्वतंत्र अस्तित्व को प्रभावपूर्ण ढंग से स्थापित करती है।
2. जेम्स हेस्टिंग्सः– संस्कृति मानव के आध्यात्मिक जीवन के विविध पक्षों को प्रकाशित करती है इसमें देश विदेश की विभूतियों के महनीय विचार और भावनाएं निहित रहती है।
3. फिलिप बैगबीः– मानव व्यवहार के समस्त विशष्टि रूप संस्कृति के अंतर्गत आ जाते हैं व्यवहार आंतरिक भी हो सकते हैं और बाहरी भी।

भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों द्वारा सुविचारित संस्कृति की परिभाषाओं को देखते हुए कहा जा सकता है कि संस्कृति मानव के संस्कारों का वह रूप है जिससे उसके सामाजिक आचार विचार, पर्व–त्योहार, रहनी करनी, रीति रिवाज, नीति धर्म, अध्यात्म कला आदि की प्रस्तुति होती है।
संस्कृति के तत्वः संस्कृत के निम्नलिखित तत्व हैंः

1. भौतिक तत्वः भौतिक तत्व को ही संस्कृति का मानसिक, अलौकिक, आध्यात्मिक या आंतरिक पक्ष की संज्ञा प्रदान की जा सकती है अभौतिक पक्ष के अंतर्गत भक्ति, दर्शन, नीति, सौंदर्य आदि की विवेचना होती है।

भौतिक और अभौतिक तत्वों की विवेचना के उपरांत संस्कृति के प्रमुख तत्व इस प्रकार हैंः–

1. समाजिक व्यवस्था
2. दार्शनिक चिंतन
3. अध्यात्मवाद
4. राजनीतिक संदर्भ
5. आर्थिक आयाम
6. सौंदर्य बोध
7. नीति तत्व
8. भाषिक भस्वरता

भारतीय संस्कृति तो बाहर से बहुरंगी प्रतीत होती है लेकिन आंतरिक दृष्टि से एक है। उसके अंत में एक ऐसी उच्च धारा प्रवाह मान है जो उत्तर–दक्षिण, पूर्व पश्चिम को एक सूत्र में पिरोने में अत्यंत समर्थ है।
भारतीय संस्कृति की प्रवृत्तियां–

1. अध्यात्मिकता भारतीय संस्कृति की प्रथम प्रसन्न प्रवृत्ति है। यह भारतीय संस्कृति की शास्वत विशेषता है।
2. भारतीय संस्कृति में समन्वय की विराट भावना है। भारतीय संस्कृति व्यक्ति व्यक्ति में किसी प्रकार के भेद को अंगीकार नही करती है।

3. प्रणय–भावना संस्कृति की अन्यतम विशिष्टता है। प्राणि–मात्र तथा प्रकृति जगत से सहज स्नेहसूत्र में बंधना हमारी संस्कृति का संदेश है।

4. भारतीय संस्कृति कर्म तथा पुनर्जन्म संबंधी सिद्धांत से अनुप्राणित है। इसलिए संतो–ग्रंथों पन्थों का मतह ै कि वर्तमान जीवन में हमें जो कुछ मिलता है वह हमारे पूर्व कर्मों का फल है।

5. एकत्व की भावना भारतीय संस्कृति का मूल स्वर है। मानव से लेकर पशु तक जो समत्व बुद्धि रखता है, एकता की भावन करता है।

6. लोक कल्याण की कामना भारतीय संस्कृति की अगली विशेषता है।

7. भारतीय संस्कृति की व्यंजन प्रवृत्तियों में आश्रम व्यवस्था (ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम, सन्यास आश्रम) तथा 16 संस्कार भी आते हैं यह सोलह संस्कार हैं– गर्भाधान, पुंसवन, सीमंतोन्नयन, जातक्रम, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, कर्णवेध, उपनयन, वेद आरंभ, समावर्णन, विवाह, वानप्रस्थ, स्नयास, आत्येवित आदि।

वैसे तो भारतीय संस्कृति की विशेषताएं महासागर की लहरों की भांति अनंत है फिर भी उक्त प्रवृत्तियों का स्थान विशेष है। साथ ही ये विशेषताएं हमारे मंतव्य को पोषित करने और परस्फुट बनाने में आधार स्वरूप कार्य करेंगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. चंद्र, सोती, विरेंद्र, भारतीय संस्कृति के मूल तत्व, दिल्ली, राजपाल एंड संस, 1998
2. गुलाब राय, भारतीय संस्कृति की रूपरेखा, ग्वालियर, साहित्य प्रकाशन मंदिर।
3. पांडे, रामसज्जन, संतों की संस्कृतिक संसृति दिल्ली उपकार प्रकाशन।
4. गुलाब राय, भारतीय संस्कृति की रूपरेखा कोमा पृष्ठ 1
5. राम सजन पांडे संतो की सांस्कृतिक समृद्धि पृष्ठ 12
6. वही पृष्ठ 12
7. वही पृष्ठ 12